गवरी महोत्सव

गवरी महोत्सव:

- हर साल मेवाड़ के भील समुदाय द्वारा 40 दिन का गवरी अनुष्ठान मनाया जाता है।

प्रकार:

- यह नृत्य-नाटिका का 40 दिवसीय उत्सव है, जो देवी और दानव के बीच लड़ाई को दर्शाता है।

इतिहास:

- यह प्रथा तीसरी या चौथी शताब्दी से अस्तित्व में है, जो गुजरात के शासक सिद्धराज जय सिंह के समय से प्रचलित थी।

कहानी:

- देवी अम्बा और दानव भीमवाल के बीच लड़ाई, जो अच्छाई की बुराई पर विजय को दर्शाती है।

मूल कहानी:

- गवरी की कहानी भगवान शिव और राक्षस भस्मासुर की है।

प्रस्तुति:

- कलाकार उन गांवों में नाटक प्रस्तुत करते हैं जहां उनकी विवाहित बहनें और बेटियां रहती हैं।

उद्देश्य:

- विवाह के बाद प्रियजनों की भलाई और गर्व की भावना पैदा करना।

नृत्य-नाटिका:

- यह मूकाभिनय और संवाद का मिश्रण है, जिसे गवरी या राई नाच कहा जाता है।

माहौल:

- **ऊर्जावान पृष्ठभूमि संगीत और रंग-बिरंगे परिधान उत्साह से भरपूर होते हैं।**

प्रदर्शन:

- **विभिन्न दृश्यों का मंचन किया जाता है, जिन्हें खेल कहा जाता है।**

कुटकड़िया:

- **प्रत्येक दृश्य से पहले कुटकड़िया नामक पात्र कहानी सुनाता है।**

पात्र:

- **सभी पात्र पुरुषों द्वारा निभाए जाते हैं, महिलाएं इसमें भाग नहीं लेतीं।**